आंतरराष्ट्रीय कृष्ण भावनामृत संघ

संस्थापक-आचार्य: कृष्ण कृपामूर्ति ए.सी. भक्तिवेदांत स्वामी प्रभुपाद

केंद्र: _____ दिनांक: _____

ब्राह्मण दीक्षा के लिए काउंसलर/अथॉरिटी की पुष्टि सेवा

मेरे (दीक्षा गुरु का नाम): _____

कृपया मेरा विनम्र प्रणाम स्वीकार करें। श्रील प्रभुपाद की जय।

मैंने _____ निम्नलिखित की पुष्टि की :

- उम्मीदवार दीक्षा प्रक्रिया में उल्लिखित सभी आवश्यक योग्यताओं का पालन करता है।
- व्यक्तिगत रूप से, व्यापक जांच सूची भरी हैं।
- व्यक्तिगत रूप से दार्शनिक परीक्षण को चिह्नित किया।
- कम से कम 1 वर्ष के लिए उम्मीदवार का उपरोक्त मानदंडों पर अवलोकन किया।
- इसलिए, यह अनुशंसा करते हुए मुझे खुशी हो रही है: _____आपके द्वारा ब्राह्मण दीक्षा के लिए। मैं उसके द्वारा किसी भी तरह की गलती के लिए एक परामर्शदाता के रूप में पूरी तरह से जिम्मेदार हूं।

आपका सेवक, _____(स्थान) _____ (तारीख) _____(संपर्क नंबर) _____ (हस्ताक्षर)

General and Spiritual Information

आध्यात्मिक नाम : _____ पहली दीक्षा की तिथि/स्थान : __/__/__|_____

प्रथम नाम : _____परिवार का नाम :_____

जन्म तिथि : ___ /___ /_____ □ पुरुष □ महिला आयु :_____ राष्ट्रीयता :_____

भक्तिमय-सेवाएं:_____ व्यवसाय (यदि कार्यरत हैं): _____

वर्तमान पता :_____

शहर : _____ राज्य/प्रांत : _____ पोस्टल कोड :_____

देश : _____ फोन नंबर : घर :_____ ऑफिस : _____ फ़ैक्स _____

स्थायी पता :_____

शहर :_____ राज्य/प्रांत : _____ पोस्टल कोड :_____

देश: _____फोन नंबर : घर :_____ ऑफिस: _____ फ़ैक्स_____

ईमेल (व्यक्तिगत/संपर्क) _____

विवाह की स्थिति □ सिंगल □ ढूंढ रहे हैं □ सगाई □ विवाहित □ वियुक्त / तलाकशुदा □ विधवा/विधुर;

पति या पत्नी का नाम (यदि लागू हो) :_____पति या पत्नी की K.C. स्थिति [_____]

बच्चों का नाम और उनका जन्म वर्ष/आयु : _____ _____

संतान इस्कॉन भक्त है? □ हाँ □ ना भक्त रिश्तेदार का नाम:_____

_____वर्षों/महीनों से कृष्ण भावनामृत के संपर्क में है| □ मंदिर में नहीं रहते

□ हां, मंदिर या मंदिर समुदाय में रहते है .□ हाँ, एक मंदिर से जुड़ा हुआ है? _____

□ क्या आपको हरिनाम दूसरे गुरु से मिला था? □ हाँ; □ ना. यदि हाँ तो नाम दें :_____

शिक्षा गुरु :_____ _____

मार्गदर्शक भक्त : _____

नाम : _____ **पहली दीक्षा तारीख :** _____ **पहली दीक्षा का स्थान :** _____

ब्राह्मण होने के लिए प्रारंभिक योग्यता:

दूसरी दीक्षा चेकलिस्ट बनाने के लिए नोट्स : **व्यावहारिक ज्ञान और व्यवहार:**	**OK'D**	**तारीख**
1. प्रति सप्ताह कम से कम संख्या में मंदिर में भाग लें (जब तक कि सक्षम नहीं होने के लिए अनुमोदित कारण न हों)।		__/__/_
2. मंदिर या नाम हट्टा या अन्य अधिकृत इस्कॉन गतिविधियों में सेवा प्रदान करने और प्रदान करने के लिए उत्साह का एक अच्छा उदाहरण होने के नाते।		__/__/_
3. कम से कम निम्नलिखित पुस्तकों को आवश्यक संख्या में पढ़ा है [पुस्तकों और समय की संख्या पर चर्चा की जानी चाहिए और अंतिम रूप दिया जाना चाहिए]		__/__/_
• भगवद गीता		__/__/_
• श्रील प्रभुपाद की जीवनी		__/__/_
• ईशोपनिषद		__/__/_
• उपदेशामृत		__/__/_
• भक्ति रसामृत भाग -1		__/__/_
• अन्य पुस्तकें =		__/__/_
4. निम्नलिखित सहित अपमानजनक और गैर-भक्ति गतिविधियों से बचते है, लेकिन केवल उन तक सीमित नहीं है:		__/__/_
• KC कारण के बिना सांसारिक टेलीविजन देखना;		__/__/_
• KC कारण के बिना सांसारिक फिल्मों में जाना;		__/__/_
• KC गतिविधियों और अन्य संबंधित जिम्मेदारियों जैसे किसी के आश्रम के कर्तव्यों में लापरवाही करना;		__/__/_
• घरेलू हिंसा या अन्य अनधिकृत हिंसा;		__/__/_
• KC कारण के बिना अत्यधिक तर्क;		__/__/_
• भक्तों को सच बताने में बेईमानी या विफलता;		__/__/_

• कुटी-नाटी की ओर अफवाह फैलाना या प्रवृत्ति;		__/__/_
• आध्यात्मिक अधिकारियों के खिलाफ राजनीतिक या आक्रामक गतिविधियां;		__/__/_
• अन्य अपमानजनक और गैर-भक्ति गतिविधियाँ जिनके लिए आध्यात्मिक गुरु और स्थानीय अधिकारियों से पूर्व अनुमति नहीं है.		__/__/_
5. कृष्णभावनामृत के प्रचार में रुचि और प्रवृत्ति दिखाता है और भक्ति कक्षाएं देने के लिए प्रशिक्षण स्वीकार करते है.		__/__/_
6. निम्न में से एक या अधिक है:		__/__/_
• मंदिर या मंदिर समुदाय का अच्छी प्रतिष्ठा वाला निवासी.		__/__/_
• मण्डली का एक सक्रिय सदस्य जो नियमित रूप से मंदिर में भाग लेते है और सेवा प्रदान करते है.		__/__/_
• एक अधिकृत नाम हट्टा समूह या नाम हट्टा भक्ति शाखा समूह का अच्छी प्रतिष्ठा वाला एक सक्रिय सदस्य है.		__/__/_
• एक कार्यक्रम है जो उपरोक्त में से एक नहीं है जो पहले स्थानीय आध्यात्मिक अधिकारियों और आध्यात्मिक गुरु (जहां संभव हो लिखित रूप में) द्वारा अधिकृत है।).		__/__/_
7. प्रतिदिन अपने 16 फेरे जप करने और सभी नियामक सिद्धांतों का ईमानदारी से पालन करने के लिए जाने जाते है।		__/__/_
8. पिछले 2 वर्षों में कोई बडा पतन नहीं हुआ है या पिछले वर्ष में किसी भी नियामक सिद्धांत को नहीं तोड़ा है.		__/__/_
9. 66% न्यूनतम अंक के साथ दार्शनिक परीक्षा उत्तीर्ण करते है।.		__/__/_
10. 90% न्यूनतम अंक के साथ व्यावहारिक परीक्षा (प्रार्थना, परंपरा, वैष्णव शिष्टाचार और प्रथाओं का बुनियादी ज्ञान) उत्तीर्ण करते है;		__/__/_
11. स्थानीय मंदिर अध्यक्ष या मण्डली के सदस्यों के मामले में स्थानीय नाम हट्टा नेताओं को इस उद्देश्य के लिए नामित और स्थानीय मंदिर अध्यक्ष या नाम हट्टा के क्षेत्रीय निर्देशक की सिफारिश है।		__/__/_
12. इस्कॉन शिष्य पाठ्यक्रम पूरा कर लिया है।		__/__/_
13. भक्ति शास्त्री कोर्स पूरा कर लिया है।		__/__/_

भक्ति आश्रय वैष्णव स्वामी द्वितीय दीक्षा दार्शनिक परीक्षा

A. भौतिक प्रकृति के बारे में

1ए) प्रकृति के तीन गुणों को सामान्य रूप से समझाइए। तीन अलग-अलग मोड में पाए जाने वाले गुणों का एक विशिष्ट विवरण शामिल करें।

2ए) प्रकृति के तीन गुणों को सामान्य रूप से समझाइए। तीन अलग-अलग मोड में पाए जाने वाले गुणों का एक विशिष्ट विवरण शामिल करें।

3ए) क्रिया (कर्म), निषिद्ध क्रिया (विकर्म), और निष्क्रियता (अकर्म) क्या है?

4ए) 8 भौतिक तत्व क्या हैं?

5ए) पांच ज्ञानेन्द्रिया, उनके विषयों और पांच कर्मेंद्रियों का वर्णन करें।

6ए) मन, बुद्धि और मिथ्या अहंकार का क्या कार्य है?

7ए) सार्वभौमिक अंडे की मूल संरचना को उसके विभिन्न ग्रह प्रणालियों और ब्रह्मांड की आवरण परतों के संदर्भ में समझाएं। इस मंडल में पृथ्वी किस प्रकार स्थित है?

8ए) जीवन की विभिन्न प्रजातियों का वर्णन करें। वे क्या हैं और कितने हैं? आत्मा मानव योनि से निम्नतर योनियों में कैसे भ्रमण करती है?

9ए) मृत्यु के समय मनुष्य अपना शरीर कैसे बदलता है?

10ए) कर्म की व्याख्या करें। कर्म का नियम जीव को कैसे प्रभावित कर रहा है?

11ए) जब कोई पवित्र और अपवित्र कार्य करता है तो क्या प्रतिक्रियाएँ होती हैं? पवित्र और अपवित्र गतिविधियों और उनकी परिणामी प्रतिक्रियाओं के कुछ उदाहरण दीजिए।

12ए) समझाएं कि देव या देवता क्या हैं। उनमें से कम से कम पाँच के नाम, गुण और गतिविधियाँ क्या हैं?

13ए) वर्णाश्रम क्या है? प्रत्येक वर्ण और आश्रम के कर्तव्य क्या हैं? आपके अनुसार इस व्यवस्था में आपकी स्वाभाविक स्थिति क्या है और क्यों? प्रत्येक वर्ण के लिए उचित आश्रम कौन सा है और इसलिए आपके अनुसार आश्रम में आपकी सर्वोत्तम स्थिति क्या है?

14ए) ब्रह्मा के जीवनकाल के संदर्भ में समय की वैदिक अवधारणा के बारे में कुछ लिखें। समय की हमारी अवधारणा के अनुसार कोई ब्रह्मा के एक दिन की गणना कैसे करेगा? युगों और उनकी अवधि की व्याख्या करें, साथ ही प्रत्येक युग में की जाने वाली आध्यात्मिक प्रक्रियाओं का भी वर्णन करें।

15ए) कलियुग के विशेष गुण क्या हैं? कलि (युग) का व्यक्तित्व कौन है और श्रीमद्भागवत उसके बारे में क्या बताता है? इस कलियुग के फायदे और नुकसान क्या हैं?

बी. आत्मा और परमात्मा पर विषय

1बी) आत्मा के उतने गुण लिखिए जितने आप जानते हैं। बताएं कि ये गुण भौतिक शरीर के गुणों से किस प्रकार भिन्न हैं।

2बी) भगवद-गीता श्लोक देहिनो 'स्मिन् यथा देहे', "जैसे देहधारी आत्मा निरंतर गुजरती रहती है, इस शरीर में ..." आदि के महत्व को पूरी तरह से समझाएं।

3बी) ईश्वर सर्व भूतानाम, सर्वस्य चाहं हृदि सन्निविष्टो, और उपद्रष्टानुमन्ता च श्लोक के संदर्भ में परमात्मा का क्या कार्य है? यदि आप संस्कृत श्लोक नहीं जानते हैं, तो परमात्मा के बारे में बताते हुए उत्तर लिखें।

4बी) परमात्मा सभी बद्धजीवों के कर्मों को कैसे नियंत्रित करते हैं?

5बी) पेड़ पर दो पक्षियों का उदाहरण क्या है और इसकी व्याख्या क्या है?

सी. कृष्ण और परम सत्य के बारे में प्रश्न

1सी) कृष्ण कौन हैं? उन्हें ईश्वर, पुरुष, भगवान, आदिदेवम के रूप में क्यों वर्णित किया गया है? आप कृष्ण के और किन गुणों के बारे में सोच सकते हैं? श्लोक के संदर्भ में प्रयास करें और उत्तर दें, अहं सर्वस्य प्रभवः।

2सी) ये यथा माम् प्रपद्यन्ते, श्लोक का तात्पर्य क्या है, "जैसे-जैसे सभी लोग मेरी शरण में आते हैं, मैं उन्हें उसी के अनुसार फल देता हूँ..."

3सी) जीवन का अंतिम लक्ष्य या उच्चतम पूर्णता क्या है? कोई इसे कैसे हासिल कर सकता है?

4सी) कृष्ण और विष्णु के व्यक्तिगत रूपों के गुण क्या हैं?

5सी) भगवान के दस अवतारों के बारे में यथासंभव अधिक से अधिक विशेषताओं की व्याख्या करें। भगवान के कितने अवतार हैं? भगवान के विभिन्न प्रकार के अवतारों की व्याख्या करें।

6सी) पंच-तत्त्व का वर्णन करें। वे कौन हैं और कृष्ण-लीला में वे कौन हैं?

7सी) भगवान के वास्तविक अवतार के लक्षण क्या हैं और एक दुष्ट के क्या लक्षण हैं जो ऐसा होने का दावा करते हैं और हम उसे यह दिखाने के लिए कैसे चुनौती देंगे कि वह भगवान है?

8सी) परम सत्य की तीन अभिव्यक्तियों का वर्णन करें, साथ ही, उस विशिष्ट यौगिक प्रक्रिया की व्याख्या करें जिसके द्वारा प्रत्येक अभिव्यक्ति का एहसास होता है।

9सी) तीन अनुभूतियों में से, अर्थात् परमात्मा, भगवान, या ब्रह्म, कौन अधिक पूर्ण है? आत्म-साक्षात्कार का कौन सा मार्ग आज के लिए अधिक उपयुक्त है?

डी. गुरु परंपरा के बारे में :

1डी) गुरु परंपरा क्या है और यह महत्वपूर्ण क्यों है? हमारे संप्रदाय और अन्य वैष्णव संप्रदाय का क्या नाम है? यदि आप जानते हैं, तो मुख्य संप्रदाय के आचार्यों के नाम बताएं।

2डी) हमारे संप्रदाय में श्रील जगन्नाथ दास बाबाजी से लेकर आज तक के संप्रदाय के आचार्यों के नाम बताइए? यदि संभव हो, तो चैतन्य महाप्रभु के समय से लेकर अब तक की संपूर्ण उत्तराधिकार सूची सूचीबद्ध करें। कृष्ण से मध्वाचार्य तक की सूची भी बताइए ।

3डी) श्लोक का तात्पर्य क्या है, तद् विद्धि प्रणिपातेन, बस एक आध्यात्मिक गुरु के पास जाकर सत्य जानने की कोशिश करो...

4डी) दीक्षा गुरु, शिक्षा गुरु और वर्तमान प्रदर्शक गुरु क्या हैं? उपरोक्त गुरुओं के साथ व्यवहार में क्या अंतर है?

5डी) 'संस्थापक-आचार्य' शब्दों का विशेष अर्थ क्या है? श्रील प्रभुपाद का इस्कॉन भक्तों के साथ क्या संबंध है?

6डी) वर्णन करें कि श्रील प्रभुपाद पश्चिम में कैसे आए और कृष्ण चेतना का आंदोलन कैसे शुरू किया?

ई. कृष्णभावनामृत से संबंधित

1 ई) आध्यात्मिक जीवन में इच्छा का क्या कार्य है?

2 ई) सनातन-धर्म क्या है?

3ई) भगवान चैतन्य भक्ति की तुलना हृदय में बीज (भक्ति-लता-बीज) बोने से करते हैं। भक्ति लता को श्रवण, जप और अन्य भक्तिमय सेवा द्वारा सींचा जाता है। कृपया उन दो प्रकार के खतरों का उल्लेख करें जिनके बारे में भगवान चैतन्य महाप्रभु आगाह करते हैं । एक भक्त अपनी भक्ति लता को इन खतरों से कैसे बचाए?

4 ई) ब्राह्मण के नौ गुण क्या हैं?

5ई) तीन उदाहरण दीजिए कि ब्राह्मण के उपरोक्त तीन गुणों का उपयोग भक्ति सेवा में आंतरिक और बाह्य रूप से कैसे किया जा सकता है?

6ई) "मैं कौन हूँ?" आत्म-बोध का मूल प्रश्न है। कृपया समझाएं "आप कौन हैं?" भगवान चैतन्य महाप्रभु की शिक्षाओं के अनुसार।

7ई) क्या कोई इंसान भगवान बन सकता है? यदि हाँ, तो प्रक्रिया समझाइये। क्या भगवान कृष्ण का भौतिक जगत में अवतरण मनुष्य की तरह हुआ था? वह किस शक्ति से भौतिक जगत में उतरते है?

8ई) ब्राह्मण को "द्विज" या दो बार जन्मा क्यों कहा जाता है? एक ब्राह्मण को अधिक सावधान रहना चाहिए क्योंकि उसे अपने कार्यों के लिए अधिक जिम्मेदार ठहराया जाएगा? वे कौन से अतिरिक्त लाभ हैं जो दूसरी दीक्षा स्वीकार करना सार्थक बनाते हैं?

9ई) चूँकि भक्ति से आसानी से मुक्ति प्राप्त की जा सकती है, तो एक भक्त सभी जोखिमों और परेशानियों को ध्यान में रखते हुए कृष्णभावनामृत का प्रसार क्यों करना चाहता है?

एफ. हमारे निजी जीवन के बारे में प्रश्न

1एफ) नियामक सिद्धांत क्या हैं? उन्हें तोड़ना बुरा क्यों है?

2एफ) प्रतिदिन 16 माला जप का महत्व तथा जप न करने के परिणाम बतायें।

3एफ) खाने से पहले और बाद में याद रखने योग्य महत्वपूर्ण बातें क्या हैं?

4एफ) कोई कब दूषित होता है और उसे नहाना ही चाहिए? संदूषण के विभिन्न स्तरों की व्याख्या करें और प्रत्येक स्तर के लिए स्वयं को कैसे शुद्ध करें।

5एफ) एक ब्राह्मण या मंदिर में स्वच्छता का स्वीकार्य रूप क्या है?

6एफ) विभिन्न आश्रमों या मंदिरों में पुरुषों और महिलाओं के बीच बातचीत का सही तरीका क्या है? मंदिर की बातचीत और अन्य गैर-सेवा उन्मुख बातचीत के संबंध में उत्तर दें।

7 एफ) संकीर्तन का महत्व क्या है?

8एफ) बताएं कि इस आंदोलन को संकीर्तन आंदोलन क्यों कहा जाता है। इस संबंध में मंदिर का क्या महत्व है?

9 एफ) विग्रह कौन हैं और उनकी सेवा में कुछ महत्वपूर्ण बिंदु क्या हैं?

जी. उत्तर दिए जाने वाले अतिरिक्त महत्वपूर्ण बिंदु :

1जी) कर्म योग, रहस्यवादी योग और भक्ति की प्रक्रियाओं को समझाइए।

2जी) निर्विशेषवाद क्या है? यह अवधारणा घटिया क्यों है और इस प्रणाली की उत्पत्ति किसने की?

3जी) शून्यवाद का दर्शन क्या है, यह मिथ्या क्यों है और इसकी शुरुआत किसने की?

4जी) व्यासदेव की असंतुष्टि को स्पष्ट करें और इसे ठीक करने के लिए क्या किया गया।

5जी) भगवद्गीता के बोलने की परिस्थितियों को स्पष्ट कीजिए।

6जी) संस्कृत और अपनी भाषा (या अंग्रेजी) में जितना संभव हो उतने श्लोक लिखें, लेकिन 15 श्लोक से कम नहीं।

परम पूज्य भक्ति आश्रय वैष्णव स्वामी की दूसरी दीक्षा अशिक्षित उम्मीदवार

सरलीकृत दार्शनिक परीक्षा (मौखिक या लिखित)

I. आवश्यक प्रश्न {उत्तीर्ण होने के लिए दोनों का सही उत्तर देना आवश्यक है}

A. परम सत्य की तीन अभिव्यक्तियों का विस्तार से वर्णन कीजिए।

B. इसके अलावा, विशिष्ट यौगिक प्रक्रिया की व्याख्या करें जिसके द्वारा व्यक्ति सामान्य रूप से "ए" में ऊपर वर्णित पूर्ण सत्य की तीन अभिव्यक्तियों में से प्रत्येक को महसूस करता

II. अतिरिक्त प्रश्न (सही उत्तरों का प्रतिशत बताइए):

1. तीन अनुभूतियों अर्थात परमात्मा, भगवान या ब्रह्म में से कौन अधिक पूर्ण है? आत्म-साक्षात्कार का कौन सा मार्ग आज के लिए अधिक उपयुक्त है?
2. भगवान चैतन्य भक्ति की तुलना हृदय में बीज (भक्ति-लता-बीज) बोने से करते हैं। भक्ति लता को श्रवण, जप और अन्य भक्ति सेवा द्वारा सींचा जाता है। कृपया उन दो प्रकार के खतरों का उल्लेख करें जिनके प्रति भगवान चैतन्य महाप्रभु आगाह करते हैं। एक भक्त अपनी भक्ति लता को इन खतरों से कैसे बचाए?
3. ब्राह्मण के नौ गुण क्या हैं?
4. तीन उदाहरण दीजिए कि उपरोक्त तीन गुणों का उपयोग भक्ति सेवा में आंतरिक और बाह्य रूप से कैसे किया जा सकता है?
5. "मैं कौन हूँ?" आत्म-बोध का मूल प्रश्न है। कृपया समझाएं "आप कौन हैं?" भगवान चैतन्य महाप्रभु की शिक्षाओं के अनुसार।
6. जीवन की सर्वोच्च पूर्णता क्या है? कोई इसे कैसे हासिल कर सकता है?
7. चूँकि कोई भी व्यक्ति भक्ति सेवा से आसानी से मुक्ति प्राप्त कर सकता है, एक भक्त सभी जोखिमों और परेशानियों को ध्यान में रखते हुए कृष्ण चेतना का प्रसार क्यों करना चाहता है?
8. पंचतत्व कौन हैं? स्पष्ट करें कि प्रत्येक पंच-तत्त्व किसका प्रतिनिधित्व कर रहा है।
9. क्या कोई इंसान भगवान बन सकता है? यदि हाँ, तो प्रक्रिया समझाइये। क्या भगवान कृष्ण का भौतिक जगत में अवतरण मनुष्य की तरह हुआ था? वह किस शक्ति से भौतिक जगत में उतरता है?
10. ब्राह्मण को "द्विज" या दो बार जन्मा क्यों कहा जाता है? एक ब्राह्मण को अधिक सावधान रहना चाहिए क्योंकि उसे अपने कार्यों के लिए अधिक जिम्मेदार ठहराया जाएगा? वे कौन से अतिरिक्त लाभ हैं जो दूसरी दीक्षा स्वीकार करना सार्थक बनाते हैं?

दूसरी दीक्षा के लिए निबंध

"मैं दूसरी दीक्षा क्यों लेना चाहता हूं।

"मैं दूसरी दीक्षा क्यों लेना चाहता हूँ।" आध्यात्मिक गुरु को यह बताते हुए एक निबंध लिखें कि आप दूसरी दीक्षा क्यों लेना चाहते हैं उनसे दीक्षा और आप क्यों चाहते हैं कि वे आपको अपनी दूसरी दीक्षा शिष्य के रूप में स्वीकार करें . आप दूसरी दीक्षा का महत्व समझा सकते हैं और उससे भी बड़ी प्रतिबद्धता जो दूसरी दीक्षा अपने साथ लाती है। कृपया यह भी बताएं कि दूसरी दीक्षा के बाद किस प्रकार से दीक्षांत समारोह में आप दूसरी दीक्षा शिष्य के रूप में श्रील प्रभुपाद के प्रसार के मिशन को पूरा करने के लिए उनकी भक्तिमय सेवा पूरे विश्व में हरिनाम संकीर्तन आंदोलन की एवं आध्यात्मिक गुरु के प्रति अपनी सेवा को बढ़ाने/सुधारने का इरादा रखते हैं। आपको क्यों लगता है कि दूसरी दीक्षा स्वीकार करने से उनके साथ एक शिष्य के रूप में आपका रिश्ते की उन्नति में मदद मिलेगी?

दीक्षा स्वीकृति शपथ

यह मेरी ईमानदार, स्वैच्छिक और प्रेमपूर्ण इच्छा और अनुरोध है कि परम पूज्य श्रील भक्ति आश्रय वैष्णव स्वामी (परम पूज्य श्रील भागवतपाद गोपाल कृष्ण गोस्वामी महाराज के शिष्य) द्वारा उनके दीक्षित शिष्य के रूप में स्वीकार किया जाए। यह स्पष्ट करने के लिए कि यह मेरे और सभी संबंधितों के लिए क्या दर्शाता है, मैं निम्नलिखित घोषणाएं करता हूं, और मैं इसके द्वारा निम्नलिखित प्रतिज्ञाएं करता हूं:

1. मैं श्रील भक्ति आश्रय वैष्णव स्वामी को हमेशा के लिए अपना दीक्षा (दीक्षा) और निर्देश (शिक्षा) आध्यात्मिक गुरु (गुरु) मानता हूं, यहां तक कि जीवन के बाद भी। यह मेरी इच्छा और प्रतिबद्धता है कि श्रील भक्ति आश्रय वैष्णव स्वामी को परम पूज्य श्रील गोपाल कृष्ण गोस्वामी महाराज, कृष्ण कृपामूर्ति श्रील ए.सी. भक्तिवेदांत स्वामी प्रभुपाद और गुरु-परंपरा में पिछले आचार्यों की भक्ति सेवा में मदद करें।
2. मैं अपने आध्यात्मिक गुरु श्रील भक्ति आश्रय वैष्णव स्वामी के साथ अपने व्यवहार में श्रील प्रभुपाद के निर्देशों, भगवत-धर्म शास्त्रों (भगवद्गीता, श्रीमद्भागवतम, चैतन्य चरितामृत, आदि) और इस्कॉन कानून के अनुसार निर्धारित निर्देशों, शिष्टाचार और सिद्धांतों का जीवन भर पालन करने की प्रतिज्ञा करता हूं।
3. मैं निम्नलिखित पापपूर्ण गतिविधियों से बचने के चार नियामक सिद्धांतों का पालन करने की प्रतिज्ञा करता हूं: (a) मांस, मछली, अंडे, प्याज, लहसुन और किसी भी मांसाहारी खाद्य उत्पाद खाना। (ख) शराब, ड्रग्स, तंबाकू, कैफीन, कॉफी, चाय आदि सहित सभी प्रकार का नशा करना। (c) जुआ, अत्यधिक सट्टा व्यापार निवेश और तुच्छ खेल करना। (d) किसी भी रूप में अवैध यौन संबंध में संलग्न होना।
4. मैं हर दिन हरे कृष्ण महा-मंत्र जप के 16 राउंड (16 × 108 मंत्र) का जाप करने की प्रतिज्ञा करता हूं।
5. मैं प्रतिज्ञा करता हूं कि मैं अपने आध्यात्मिक गुरु परम पूज्य श्रील भक्ति आश्रय वैष्णव स्वामी द्वारा मुझे दिए गए सामान्य और विशिष्ट व्यक्तिगत निर्देशों का पालन करूंगा। मैं इन निर्देशों को श्रील प्रभुपाद के भगवान कृष्ण की इच्छा का प्रतिनिधित्व करने के रूप में स्वीकार करता हूं।
6. एक दीक्षित शिष्य के रूप में मैं समझता हूं कि मुझे ब्रह्म-मध्व-गौड़िय- (इस्कॉन) के शाश्वत आश्रय के सदस्य के रूप में स्वीकार किया गया है, जो कृष्ण कृपामूर्ति श्रील ए.सी. भक्तिवेदांत स्वामी प्रभुपाद के माध्यम से आ रहा है और मैं श्रील भक्ति आश्रय वैष्णव स्वामी से अपने आगे के आध्यात्मिक निर्देशों और दीक्षा को स्वीकार करने की प्रतिज्ञा करता हूं और ऐसी परिस्थितियों में जहां वह उन्हें देने के लिए इस दुनिया में मौजूद नहीं है, मैं केवल उसी से स्वीकार करूंगा वास्तविक इस्कॉन आध्यात्मिक गुरु श्रील प्रभुपाद का प्रतिनिधित्व करते हैं।
7. मैं श्रील प्रभुपाद के विस्तार के रूप में इस्कॉन (आंतरराष्ट्रीय कृष्ण भावनामृत संघ) के प्रति हमेशा वफादार रहूंगा और मैं अपने आध्यात्मिक गुरु और इस्कॉन के मिशन के लिए हानिकारक कुछ भी करने से बचूंगा।

दीक्षित का नाम: _____
दीक्षित के हस्ताक्षर: _____
दीक्षा का स्थान: _____ दिनांक: _____/_____/_____
गवाह: (1) _____ (2) _____

संस्थापक-आचार्य: कृष्ण कृपामूर्ति ए.सी. भक्तिवेदांत स्वामी प्रभुपाद

केंद्र: _____ दिनांक:_____

हरिनाम दीक्षा के लिए आधिकारिक सिफारिश

को (दीक्षा गुरु का नाम): _____

कृपया मेरा विनम्र प्रणाम स्वीकार करें। श्रील प्रभुपाद की सभी की जय। यह सिफारिश करने के लिए मुझे खुशी है:

_____

आपके द्वारा दूसरी दीक्षा के लिए। मुझे लगता है कि उसने मेरी समझ के अनुसार दीक्षा के लिए आवश्यक योग्यताओं को पूरा किया है। विशेष रूप से, पिछले बारह महीनों से वह अनुकूल भक्ति सेवा में लगा हुआ है, प्रतिदिन सोलह माला जप, मंदिर के कार्यक्रम में भाग लिया है (व्याख्यान को कम से कम 1 घंटे ध्यान से सुनना), और चार नियामक सिद्धांतों का पालन किया है। वह कृष्णभावनामृत के दर्शन और दीक्षा के लिए इस्कॉन की संरचना और उद्देश्य में पर्याप्त रूप से जानकार है, जैसा कि इस्कॉन कानून के तहत निर्धारित परीक्षा उत्तीर्ण करने से स्पष्ट है। उम्मीदवार को दूसरी दीक्षा प्राप्त किए एक वर्ष से अधिक समय हो गया है। वह सीधे मंदिर विग्रह पूजा और मंदिर के विग्रह के लिए खाना पकाने में लगे रहेंगे।

इन योग्यताओं को या तो मेरे द्वारा व्यक्तिगत रूप से देखा गया है या मैंने अपने मंदिर/क्षेत्र में वफादार परामर्शदाता उपदेशक से उनकी पुष्टि की है।

आपका सेवक,

_____(नाम)

_____ (शीर्षक)

_____ (स्थान)

_____ (तारीख)

नोट*: उपरोक्त पत्र इस्कॉन लेटरहेड पर होना चाहिए।